Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 3 | Issue : 10 | Oct 2017



A STUDY OF PROFESSIONAL COMMITMENT ON MIDDLE SCHOOL TEACHERS

ek/;fed fo|ky; d`f'k{kdk dh 0;kolkf;d opuc)rk dk v/;;u

Manoj Kumar

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र).

''भारत का भविष्य कक्षाओं में निहित है'' कोठारी आयोग (1966) के वक्तव्य से इस देश की शैक्षिक व्यवस्था में विद्यालय की महत्ता स्पष्ट होती है। विद्यालय एक वह संस्था है जो गुणात्मक शिक्षा की प्राप्ति में अहम भूमिका निभाता है।

जीवन के रास्ते का मार्गदर्शन करने हेतु ईश्वर ने अपने प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक (गुरु) का निर्माण किया है। सर्वविदित है कि श्रेष्ठ शिक्षक की सहायता, विश्वास व उसके विद्वतापूर्ण एवं उचित –निर्देशन के अभाव में शिक्षार्थी कि कर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में रहता है तथा अपने जीवन के मूल्यों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने में असहाय महसूस करता है। पुरातन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च व श्रेष्ठतम् स्थान दिया गया है। उसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है। क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं वे बच्चे ही भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। इस प्रकार शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं कि समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक परंपराएँ तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केंद्र है और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायक होता है। शिक्षक सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी है, जिनमें पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्त कें,मूल्यांकन शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षण उद्देश्य आदि आते हैं। इस प्रकार अध्यापक , शिक्षा पद्धति का केंद्र बिंदु है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षक पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में कहा गया है कि शिक्षक का कर्त्तव्य विद्यार्थियों के चरित्र का निमार्ण करना है। इसके लिए अध्यापक में ही सद्गुण नहीं होंगे तो वह बच्चों में कैसे अच्छे गुणों का विकास कर सकेगा। अतः अध्यापकों में ऐसे गुण व क्षमताओं का विकास करने के लिए उन्हें निरंतर अध्ययनरत रहना चाहिए । भारतीय समाज में शैक्षणिक सुधार की आवश्यकता का एक लंबे समय से लगातार अनुभव किया जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता

शोधकर्ता ने विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् पाया कि शिक्षण अभिवृतियों पर विभिन्न शोधकार्य हो चुके हैं। लेकिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक वचनबद्धता का अध्ययन, पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक वचनबद्धता का अध्ययन करने का निश्चय किया ।

परिभाषीकरण

व्यावसायिक वचनबद्धता:

व्यावसायिक वचन बद्धता से तात्पर्य अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण तथा समर्पित होकर पूरी लगन व निष्ठा से कार्य करना है। विभिन्न प्रकार के कारक है जिनका प्रभाव व्यावसायिक वचन बद्धता पर पड़ता है जैसे उच्च स्तर की स्वायत्तता, विशिष्ट कार्य में अभिप्रेरित करने वाली शक्तियाँ उत्तरदायित्व का उच्च स्तर स्वयं के कार्य–निश्पादन का संतुष्टि स्तर, कृत्य–संतोश आदि।

संबंधित अध्ययन

यद्यपि विद्यार्थियों की अभिवृति एवं जागरूकता पर इससे कुछ संबंधित अध्ययन किए गए हैं। मीडलेटन (1988) ने टीचर कैरियर लिडर कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की अभिवृति पर अध्ययन किया और टिचाटोग, ज. नद्वनडू (2006) ने माध्यमिक विधालयों के शिक्षकों की सेवारत दूरस्थ कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों के 149 सेवारत शिक्षकों का चयन किया गया। आहलूवालिया (1974) ने छात्राध्यापकों की अभिवृति का मापन किया व उपाध्याय (1984) ने सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत मूल्यों तथा अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। रामचंद्रन (1991) ने भावी शिक्षकों की अध्ययन के प्रति अभिवृत का अध्ययन किया। रामा (1992) ने आवासीय तथा अनावासीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति का अध्ययन किया। इन्होंने माध्यमिक विद्यालयों (आवासीय तथा अनावासीय) के 400 अध्यापकों का चयन किया। शोधकर्ता ने विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् पाया कि शिक्षण अभिवृतियों पर विभिन्न शोधकार्य हो चुके हैं। लेकिन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक वचनबद्धता का अध्ययन, पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक वचनबद्धता का अध्ययन करने का निश्चय किया। शोधकर्ता ने संबंधित समस्या को निम्न कारणों से चुना:

1. अध्यापक अपने व्यावसायिक के प्रति कितनी वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं ज्ञात किया जा सके।
2. दूसरा प्रमुख कारण यह है कि यह समस्या नवीन है। अब तक की अधिकांश समस्याएँ केवल सेवापूर्व शिक्षकों एवं प्राथिमिक अध्यापकों से ही संबंधित हैं ,जिनमें शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों के स्कूली वातावरण का ही अध्ययन किया गया है।
3. इस समस्या का अध्ययन करने के लिए समय व साधनों के अनुसार आँकड़ों के मिल जाने की आशा है। इस अध्ययन के द्वारा शोधकर्ता आवश्यक कारणों को जान कर यह प्रयास करेगा कि किन–किन क्षेत्रों में आवश्यक सुधार किए जाएँ , जिससे शिक्षकों के शिक्षण , शैक्षिक स्तर तथा जीवन मूल्यों में सुधार आ सके। वे अपने व्यावसायिक के प्रति वचनबद्ध तथा समर्पित हो सकें। इस शोध से केवल माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का ही नहीं , बल्कि पूरे अध्यापक वर्ग का विकास होगा जिससे शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्तियों में सुधार आएगा, फलस्वरुप शिक्षार्थी भी देश के अच्छे मूल्यवान आदर्श नागरिक बनेंगे, जिससे देश का भविष्य उज्जवल होगा। शोध कार्य से प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा और उम्मीद है कि इसके निष्कर्ष संपूर्ण भारत के लिए एक सार्थक प्रयास के रूप में सामने आएंगे तथा माध्यमिक शिक्षा को एक नया आयाम मिल सकेगा।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
2. माध्यमिक विद्यालयों की महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
3. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
4. माध्यमिक विद्यालयों के आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
5. माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभववाले शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
6. माध्यमिक विद्यालयों के विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना
7. माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धत में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
3. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक विद्यालयों के आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकोंएवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं

Copyright© 2017, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

है।

6. माध्यमिक विद्यालयों के विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध उपकरण

न्यादर्श चयन करने के पश्चात् किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध उपकरणों का होना नितांत आवश्यक है। यदि यह कहा जाए कि शोध उपकरणों के अभाव में कोई भी शोध कार्य संभव नहीं है तो शायद यह अतिश्योक्ति नहीं होगी । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्तमान शोध के उद्धेश्यों को प्राप्त करने के लिए दत्त संकलन उपकरणों का चयन सावधानीपूर्वक किया है। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है।

1- **डॉ. मीना बुद्वीसागर राठोड़ एवं मधुलिका वमा** द्वारा निर्मित अध्यापक की व्यावसायिक वचनबद्धता मापनी का प्रयोग किया गया है। इसमें कुल 58 कथन हैं प्रत्येक कथन तीन विकल्प अ,ब,एवं स दिए गए हैं, जो कि परिस्थिति अनुसार अध्यापक के विचार या व्यवहार को प्रदर्षित करते हैं।

शोध के चर

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुल 9 चरों का समावेश किया गया है। जिनमें 7 चर विषय, लिंग, क्षेत्र ,जाति, धर्म, आर्थिक व वैवाहिक स्थिति निराश्रित चर हैं तथा 2 चरों, जागरूकता एवं अभिवृति मापनी को आश्रित चर माना गया है।

समष्टि एवं न्यादर्श का चयन

किसी भी शोधकर्ता के सफल संचालन हेतु यह आवश्यक है कि न्यादर्श का चयन सही एवं वैज्ञानिक आधार पर किया जाए। वर्तमान में झारखण्ड के कुल 24 ज़िले हैं तथा इनमें कार्यरत सभी माध्यमिक शिक्षक इस शोध के लिए समष्टि है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता के लिए यह कठिन होगा कि संपूर्ण समष्टि पर अनुसंधान किया जाए। अतः शोधकर्ता यदृच्छि विधि से अनुसंधान के लिए हजारीबाग जिला के कुल 100 माध्यमिक शिक्षकों का चयन किया गया है।

चयनित शिक्षकों का प्रोफाईल

क्र.सं.	विशेषताएँ	वर्गा / समूह	आवृति
1	विषय	कला / वाणिज्य	18
		विज्ञान	16
2	लिंग	पुरुष	58
		महिलाएँ	42
3	निवास क्षेत्र	शहरी	45
		ग्रामीण	55
4	जति वर्ग	सामान्य वर्ग	41
		आरक्षित वर्ग	59
5	विद्यालय	शासकीय	58
		अशासकीय	42
6	वैवाहिक स्थिति	विवाहित	51
		अविवाहित	49
7	अनुभव	5 वर्ष से कम	56
		5 वर्ष से अधिक	44

परिसीमन

इस अध्ययन में झारखण्ड के सभी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों को समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शामिल करना कठिन होगा इसलिए प्रस्तुत समस्या का अध्ययन प्रकृत को संज्ञान में रखते हुए शोधकर्ता ने झारखण्ड के हजारीबाग के विभिन्न ब्लाकों से 50 माध्यमिक विद्यालयों से कुल 100 शिक्षकों का चुनाव किया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन एवं विश्लेशणके लिए मध्यमान , मानक विचलन एवं टी–परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया है। सहसंबंध ज्ञात करने के लिए कार्लपियर्सन की सहसंबंध ज्ञात करने की विधि का उपयोग किया गया है। सभी सांख्यिकी गणना कंप्यूटर एवं वैज्ञानिक संगणन की सहायता से की गई है।

प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण

प्रत्येक शोध में परिकल्पना की रचना के पश्चात् उसके परीक्षण हेतु आवश्यकता होती है। अनुसंधानकर्ता के लिए उचित परिणामों पर पहुँचने के लिए परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करना अति आवश्यक है। विश्लेषण हेतु प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन करने पर अनावश्यक आँकड़ों व अनावश्यक परिणामों को निकालने से बचा जा सकता है। प्राप्त आँकड़ों से आवश्यकतानुसार अधिकतम परिणाम प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता ने आँकड़ों को इस प्रकार सारणियों में व्यवस्थित किया है जिससे कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन (हजारीबाग के संदर्भ में) किया जा सके। आँकड़ों का विश्लेषण वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचने का कार्य करता है। बिना विश्लेषण के द्वारा प्राप्त अध्ययन सारणी की कोई उपयोगिता नहीं होती है। समस्या के संबंध में निश्चित ज्ञान की प्राप्ति हेतु अध्ययन की सामग्री का विश्लेषण किया जाना अति आवश्यक है। प्रत्येक सर्वेक्षण कार्य में शोधकर्ता को आँकड़ों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिनकी अस्पष्टता के कारण शोध में त्रुटिपूर्ण होने की संभावना अधिक रहती है। किसी भी अनुसंधान में प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर उनकी व्यवस्था की जाती है। अनुसंधानकर्ता ने अपने शोध प्रबंध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन (हजारीबाग जिला के संदर्भ में) करने के लिए माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों से आँकड़ों का संकलन किया है। अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया गया। सभी वर्गों एवं उपवर्गों का मध्यमान, मानक विचलन ज्ञात किया गया है एवं क्रान्तिक अनुपात निकाला गया है।

सारणीयों की व्याख्या

शोधकर्ता ने संकलित आँकड़ों के आधार पर शोध में 08 सारणियों एवं विवेचना की है जो इस प्रकार है

तालिका 4.3 (1)

विषयानुसार माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	विषय / (वर्ग)	संख्या (n)	स्वतंत्रांश	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	कला	67	98	51.73	3.93	3.46	*एवं**
2	विज्ञान	33		48.85	3.92		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

*पर सार्थक अंतर, .01 **.05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3(1) के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का मध्यमान (51.73 एवं 48.85) एवं मानक विचलन क्रमशः(3.93एवं 3.92) प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से कला वर्ग के शिक्षकों की विज्ञान वर्ग के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर मान 3.46 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से अधिक है अतः माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धत में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का मत है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का मानसिक स्तर अनुसंधान करने के लिए या उच्च शिक्षण हेतु ज़्यादा उपयुक्त है, जबकि कला वर्ग के शिक्षक सामाजिकता, नैतिकता के साथ बच्चों के विकास में ज़्यादा सहायक सिद्व होते हैं।

तालिका 4.3 (2)

लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	लिंग	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	पुरुष	49	98	50.94	3.96	1.26	***
2	महिलाएँ	51		49.95	3.87		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

*.01 पर सार्थक अंतर , ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3 (2)के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 50.94 एवं 49.96 की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर CR मान 1.26 प्राप्त हुआ है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की दूरवर्ती शिक्षा व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि पुरुष शिक्षक ज़्यादा सक्रिय होते हैं तथा शिक्षण को प्रभावशीलता प्रदान करते हैं जबकि महिला शिक्षक विद्यालयों में अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती हैं,

तालिका 4.3 (3)
निवास क्षेत्र के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	निवास क्षेत्र	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	शहरी	40	98	49.75	4.04	1.46	***
2	ग्रामीण	60		50.93	3.83		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या।

*.01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी 4.3 (3) के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 49.75एवं 50.93 एवं मानक विचलन क्रमशः 4.04 एवं 3.83 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से ग्रामीण शिक्षकों की शहरी शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 पर CR मान 1.46 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अधिकतर माध्यमिक विद्यालय ग्रामीण परिवेश में हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों की मूलभूत समस्याओं से परिचित हैं अतः शहरी शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्षित करते हैं।

तालिका 4.3 (4)
लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	जाति वर्ग	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	सामान्य वर्ग	52	98	50.81	4.21	0.91	***
2	आरक्षित वर्ग	48		50.10	3.60		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या ।

*.01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3 (4) के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग शिक्षकों व्यावसायिक के प्रति वचनबद्धता के अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 50.81 एवं 50.10 एवं मानक विचलन क्रमशः 4.21 एवं 3.60 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से सामान्य वर्ग के शिक्षकों की आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 0.91 प्राप्त हुआ , जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है अतः माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग शिक्षकों के एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं हैं। शोधकर्ता का मत है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा जागरूकता रखते हैं। अतः उनकी व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा पाई जाती है।

तालिका 4.3 (5)
अनुभव के आधार पर माध्यमिक विधालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	अनुभव स्तर	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	5 वर्ष से कम	56	98	50.17	4.19	0.93	***
2	5 वर्ष से अधिक	44		50.88	3.46		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या ।

*.01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3 (5) के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 50.17 एवं 50.88 एवं मानक विचलन क्रमशः 4.19 एवं 3.46 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 0.93 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले व्यवसाय व्यावसायिक के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों से शिक्षण व्यावसायिक के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्षित करते हैं।

तालिका 4.3 (6)
वैवाहिक स्थिति के आधार पर माध्यमिक विधालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	वैवाहिक स्थिति	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	वैवाहिक	74	98	50.17	4.20	1.26	***
2	अवैवाहिक	26		51.19	2.97		

n–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या ।

*.01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3 (6) के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः 50.17 एवं 51.19 एवं मानक विचलन क्रमशः 4.20 एवं 2.97 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से विवाहित शिक्षकों की अविवाहित शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 1.26 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से कम है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं हैं। शोधकर्ता का मत है कि अविवाहित शिक्षक नवागत होने के साथ–साथ पारिवारिक जिम्मेदारी कम होने के कारण विवाहित शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्षित करते हैं।

तालिका 4.3 (7)
विद्यालय के आधार पर माध्यमिक विधालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

क्रमांक	विद्यालय	संख्या (n)	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR मान	सार्थकता
1	शासकीय	65	98	51.29	3.72	3.07	*एवं**
2	अशासकीय	35		48.86	3.85		

*.01 पर सार्थक अंतर, ** .05 पर सार्थक अंतर *** सार्थक अंतर नहीं

सारणी संख्या 4.3 (7) के अनुसार शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन का मध्यमान क्रमशः

51.29 एवं 48.86 एवं मानक विचलन क्रमशः 3.72 एवं 3.85 प्राप्त हुए। मध्यमानों की दृष्टि से शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है। स्वतंत्रांश संख्या 98 CR मान 3.07 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मान से अधिक है अतः शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अतंर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि शासकीय शिक्षक अधिक वेतनमान एवं सुविधाओं के कारण अशासकीय शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता " का मापन करना है। इसक लिए शोध कर्ता ने शोध अध्ययन में सामान्य रूप आँकड़ों के संकलन हेतु डॉ. मीना बुद्धीसागर राठौड़ एवं मधुलिका वर्मा द्वारा निर्मित अध्यापक की व्यावसायिक के प्रति वचनबद्धता मापनी उपकरण का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने न्यादर्श को परिवेश (ग्रामीण, शहरी) लिंग (स्त्री, पुरुष) विवाहित – अविवाहित एवं अनुभव, विद्यालय के आधार के समूहों में विभक्त करके किया है। अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों की सांख्यिकीय गणना विभिन्न समूहों में की गई है। समूहों से प्राप्त प्राप्तांकों की सांख्यिकीय विवेचना और विश्लेषण के उपरांत परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है। अध्ययन से प्राप्त होने वाले परिणामों से प्राप्त निष्कष निम्नलिखित है:

1. मध्यमानों की दृष्टि से कला वर्ग के शिक्षकों की विज्ञान वर्ग के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पायी गई है। एवं माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का मत है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का मानसिक स्तर अनुसंधान करने के लिए या उच्च शिक्षण हेतु ज़्यादा उपयुक्त है , जबकि कला वर्ग के शिक्षक सामाजिकता , नैतिकता के साथ बच्चों के विकास में ज़्यादा सहायक सिद्ध होते हैं।

2. मध्यमानों की दृष्टि से पुरुष शिक्षकों की महिला शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की दूरवर्ती शिक्षा व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि पुरुष शिक्षक ज़्यादा

सक्रिय होते हैं तथा शिक्षण को प्रभावशीलता प्रदान करते हैं, जबकि महिला शिक्षक अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती हैं।

3. मध्यमानों की दृष्टि से ग्रामीण शिक्षकों की शहरी शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं माध्यमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों के एवं ग्रामीण शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अधिकतर माध्यमिक विद्यालय ग्रामीण परिवेश में हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों कि मूलभूत समस्याओं से परिचित हैं अतः शहरी शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदशित करते हैं।

4. मध्यमानों की दृष्टि से सामान्य वर्ग के शिक्षकों की आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग शिक्षकों के एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा जागरूकता रखते हैं अतः उनकी व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज़्यादा पाई जाती है।

5. मध्यमानों की दृष्टि से 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों की 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षको एवं 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि माध्यमिक विद्यालयों के 5 वर्ष से अधिक अनुभव वाले शिक्षक ज़्यादा अनुभव के कारण 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

6. मध्यमानों की दृष्टि से विवाहित शिक्षकों की अविवाहित शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं माध्यमिक विद्यालयों के विवाहित शिक्षकों एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अविवाहित शिक्षक नवागत होने के साथ–साथ पारिवारिक ज़िम्मेदारी कम होने के कारण विवाहित शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

7. मध्यमानों की दृष्टि से शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक अभिवृति पाई गई है एवं शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर हैं। शोधकर्ता का मत है कि शासकीय शिक्षक अधिक वेतनमान एवं सुविधाओं के कारण अशासकीय शिक्षकों से व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धताा प्रदर्शित करते हैं।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा ''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता, (हजारीबाग जिला के संदर्भ में)''नामक विषय पर किए गए शोध अध्ययन में शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति विभिन विषयों, वर्गों को वचनबद्धता का अध्ययन किया गया है तथा उनकी तुलनात्मक विवेचना भी की गई है। किसी भी देश की उन्नति में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसमें माध्यमिक शिक्षा अग्रणीय भूमिका निभा रही है। माध्यमिक शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए उस पर और गहन एवं विशद अध्ययन किए जा सकते हैं। इस समस्या से संबंधित भावी शोध की निम्न संभावनाएँ हो सकती हैं:

1. प्रस्तुत अनुसंधान 1 जिला के अंतर्गत किया गया है। भावी अनुसंधानकर्ता झारखण्ड राज्य के स्तर पर भी अध्ययन कर सकते हैं।

2. प्रस्तुत अनुसंधान में विभिन्न वर्गों, समुदायों के 100 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। भावी अनुसंधानकर्ता ज़्यादा बड़ा न्यादर्श लेकर अनुसंधान कर सकते हैं । जिससे निष्कर्ष अधिक सटीक एवं विश्वसनीय होंगे।

संदर्भ

1. भट्टाचार्य, जी. सी. 2012 ,अध्यापक शिक्षा , अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा सातवाँ संस्करण पेज न. 301–325।

2. कपि , एच .के .1991. अनुसंधान की विधियाँ. कचहरी घाट , आगरा

3. शर्मा, आर .ए.एवं चतुर्वेदी ,शिक्षा (2011). अध्यापक शिक्षक, इन्टरनेशन पब्लिशिंग हाउस, मेरठ द्वितीय संस्करण , पेज न. 124–136।

4. कश्यप, सुभाष .1992. हमारा संविधान नेशनल बुक ट्रस्ट ,इंडिया. पृ.सं 102.

5. जैन, अलका.1996. अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के अनुदेशकों की बालकेंद्रित शिक्षण के प्रति अभिवृति एवं उनकी समस्याओं का अध्ययन ,राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान ,अजमेर (राज.).

6. मिश्रा , सुनीता एवं यादव , संजना (2014), परिप्रेक्ष्य, न्यूपा नया दिल्ली पेज न. 89–102।

7. रायजादा , बी.एस.एवं वर्मा बी.वन्दना (2013), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी , जयपुर द्वितीय संस्करणए पेज न. 205–220।

8. गुप्ता, एस.पी. 2014, अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन ,इलाहाबाद संशोधित संस्करण पेज न. 345–362।